

[2023] 7 एस. सी. आर 1

ए.

रावी मंडल बनाम.

उत्तरखंड राज्य (2011 की आपराधिक अपील संख्या 511) 18 मई, 2023

बी.

[ऋषिकेश रॉय और मनोज मिश्रा, जे. जे.]

दंड संहिता, 1860-एस. एस.302, 34 और 201-शस्त्र अधिनियम, 1959-एस. एस.4 और 25-पी. डब्ल्यू.-1 (मृतक के पिता) द्वारा जंगल में 0730 बजे अपने बेटे के शव को स्थापित करने के बाद दर्ज की गई प्राथमिकी के तहत बरी किया गया, जिसमें आरोप लगाया गया कि मृतक लगभग 2100 बजे 31.10.2001 पर 'आर' और 'जी' के साथ था-बाद में, उसने लिखित जानकारी में 'जी' को 'एस' से बदल दिया-दोनों आरोपी (आर और एस) को विचारण न्यायालय यू/एस द्वारा दोषी ठहराया गया था। 302 आर/डब्ल्यू।एस. 34, आई. पी. सी. और एस. एस. का <आई. डी. 1.4/25 शस्त्र अधिनियम- विचारण न्यायालय ने पीडब्लू-2 और पीडब्लू-5 की गवाही पर भरोसा करते हुए यह निष्कर्ष निकाला कि मृतक को आखिरी बार आरोपी व्यक्तियों के साथ जीवित देखा गया था- विचारण न्यायालय ने यह भी देखा कि एफएसएल रिपोर्ट के अनुसार मौके से बरामद खाली कारतूस उसी पिस्तौल से दागा गया था जो 'एस' से बरामद किया गया था-उच्च न्यायालय ने दोषसिद्धि की पुष्टि की-अपील पर कहा गया: पुलिस गवाहों की गवाही के अनुसार, यह सूचना देने वाला ही था जिसने पुलिस को अपने बेटे के शव के बारे में जानकारी दी-जबकि पीडब्लू-1 के अनुसार पुलिस ने उसे सूचित किया कि उसके बेटे का शव जंगल में मिला है-प्राथमिकी में इस बात का कोई खुलासा नहीं है कि शव जंगल में कैसे मिला-प्राथमिकी में किसी भी गवाह का नाम नहीं है जिसने मृतक को आरोपी व्यक्तियों के साथ देखा था-इसके अलावा, 'एस' को पहली बार में प्राथमिकी में आरोपी के रूप में नामित नहीं किया गया था और केवल बाद के चरण में प्रस्तुत किया गया था-पीडब्लू-2 द्वारा दिए गए स्पष्टीकरण में देरी हो रही है-इसी तरह, पीडब्लू-5 द्वारा विषम समय पर घटनास्थल पर उसकी उपस्थिति के लिए दिया गया स्पष्टीकरण गलत प्रतीत होता है-पीडब्लू-5 द्वारा दिए गए बयान में विरोधाभास है। 161 और मृतक के साथ 'जी' की उपस्थिति के बारे में न्यायालय के समक्ष उनके अभिसाक्ष्य में-इसलिए, पीडब्लू-2 और पीडब्लू-5 की गवाही विश्वास को प्रेरित नहीं करती है-उनका अभिसाक्ष्य दर्ज करते समय फॉरेंसिक रिपोर्ट/बैलिस्टिक रिपोर्ट को 'एस' तक नहीं रखा गया था। 313 Cr.P.C-हाथ में मामले में, साक्ष्य अभियुक्त-अपीलार्थियों की दोषसिद्धि को बनाए रखने के लिए विश्वास-प्रेरक नहीं था-इस प्रकार, आक्षेपित निर्णयों और विचारण न्यायालय के आदेशों को अपास्त करना दिया गया।

सी.

डी.

ई.

एफ.

जी.

एच.

1

2 सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट [2023] 7 एस. सी. आर.

ए.

गवाह-मौका गवाह-विश्वसनीयता-आयोजित:कानून का निपटारा हो जाता है, जो है, एक संयोग गवाह के साक्ष्य के लिए बहुत सतर्क और अभिसाक्ष्यीबी जांच की आवश्यकता होती है और एक संयोग गवाह को घटना के स्थान पर अपनी उपस्थिति को पर्याप्त रूप से समझाना चाहिए-संयोग गवाह की गवाही जिसकी घटना के स्थान पर उपस्थिति संदिग्ध बनी हुई है, उसे खारिज अभिसाक्ष्य दिया जाना चाहिए।

बी.

अपीलों को अनुमति देते हुए, न्यायालय ने

यह अभिनिर्धारित किया कि **-1.** मामले की उल्लेखनीय विशेषता यह है कि सूचना देने वाले के बेटे का शव जंगल में मिलने के बाद मामले की प्राथमिकी **0730** बजे **01.11.2001** पर दर्ज की गई थी। पुलिस गवाहों की गवाही के अनुसार, यह मुखबिर ही था जिसने पुलिस को जंगल में अपने बेटे का शव मिलने की जानकारी दी और उसके बाद, प्राथमिकी के आधार पर, जांच शुरू की गई। जबकि, पीडब्लू-**1** के अनुसार पुलिस ने उसे सूचित किया कि उसके बेटे का शव जंगल में मिला है और उसके बाद वह मौके पर गया, शव को पुलिस स्टेशन लाया और फिर रिपोर्ट दर्ज कराई। अभियोजन पक्ष के गवाहों की गवाही में यह दरार महत्वपूर्ण है क्योंकि यह एक सवाल खड़ा करेगा कि क्या अभियोजन पक्ष का मामला सूचना देने वाले के अपने ज्ञान और जानकारी पर आधारित है या सुझावों/अनुमान के काम पर, पुलिस के कहने पर हो सकता है। [पैरा **19**] [**18-एच; 19-ए-सी**]

सी.

डी.

ई.

**2.** अभियोजन का मामला मुख्य रूप से इस साक्ष्य पर आधारित है कि मृतक को अंतिम बार घटना के संभावित समय पर या उसके आसपास घटना स्थल के पास दो अभियुक्तों के साथ

जीवित देखा गया था। इस तरह के साक्ष्य दो गवाहों, पी. डब्ल्यू.-2 और पी. डब्ल्यू.-5 से सामने आते हैं। जहां तक पीडब्लू-2 का संबंध है, वह पुलिस रिपोर्ट/आरोप पत्र में गवाह के रूप में सूचीबद्ध नहीं है। उन्होंने पहली बार **18.02.2002** पर, यानी जिस तारीख को पुलिस रिपोर्ट तैयार की गई थी, एक हलफनामे पर पुलिस को अपना बयान दिया। इसका तात्पर्य यह है कि वह साढ़े तीन महीने तक चुप रहे। इसलिए, यह न्यायालय इस बात की जांच करेगा कि क्या पीडब्लू-2 द्वारा कोई ठोस स्पष्टीकरण दिया गया था। तत्काल मामले में, पीडब्लू-2 द्वारा उनके साढ़े तीन महीने के मौन के लिए दिया गया एकमात्र स्पष्टीकरण यह है कि उन्हें खतरा महसूस हुआ। अपनी खतरे की धारणा के संबंध में, पीडब्लू-2 ने कहा कि घटना की रात जब उसने 'आर' और 'एस' को जंगल से निकलते देखा, तो घटना के तुरंत बाद, उसने उनके हाथों और कपड़ों को खून से सना हुआ देखा। ए पर

एफ.

जी.

एच.

3

रावी मंडल बनाम उत्तरखंड राज्य

पीडब्लू-2 को देखकर, उन दोनों अभियुक्तों ने उसे यह कहकर धमकी दी कि अगर उसने जो देखा है उसके बारे में किसी को बताया तो उसका भी वही हाल होगा। पीडब्लू-2 ने कहा कि दोनों अभियुक्तों की गिरफ्तारी के साथ उनका डर दूर हो गया, इसलिए वह अब गवाह के रूप में पेश हो रहे हैं। यदि यही कारण था कि उसने पहले खुलासा नहीं किया था, तो आरोपी की गिरफ्तारी के बाद उसके द्वारा शीघ्र खुलासा किया जाना चाहिए था। विशेष रूप से, दोनों अभियुक्तों को **24.11.2001** पर गिरफ्तार किया गया था, फिर भी, **18.2.2002** तक उनके द्वारा कोई खुलासा नहीं किया गया था। इसलिए, खुलासा करने में देरी के लिए उनके द्वारा दिया गया स्पष्टीकरण आत्मविश्वास बढ़ाने वाला नहीं है। [पारस **22-24** [[**20-E, G; 21-G-H; 22-A-B**]

बी.

सी.

**3.** इसके अलावा, मौके पर पीडब्लू-2 की उपस्थिति स्वाभाविक नहीं लगती है, विशेष रूप से, रात के उस विषम समय में। अपराध स्थल पर अपनी उपस्थिति के बारे में बताने के लिए, पीडब्लू-2 ने कहा कि उसके माता-पिता दूसरी जगह रहते हैं, और इसलिए, उनसे मिलने के लिए वह उस दुर्भाग्यपूर्ण रात उनसे मिलने गया और लौटते समय वह इस घटना को देख सकता था। जिरह के दौरान, पीडब्लू-2 ने कहा कि वह आमतौर पर अपने परिवार के साथ

**2100** बजे रात का खाना खाता है और वह सप्ताह में कम से कम एक बार अपने माता-पिता से मिलने जाता था। पीडब्लू-2 के अनुसार, उस दुर्भाग्यपूर्ण रात वह अपने घर में रात का खाना खाने के बाद अपने माता-पिता से मिलने के लिए अपने घर से निकला और लौटते समय, **0030** बजे उसने घटना देखी। यह व्याख्या आत्मविश्वास बढ़ाने वाली नहीं है, विशेष रूप से, क्योंकि रात के उस विषम समय में पीडब्लू-2 की उनके घर की यात्रा की पुष्टि करने के लिए उनके माता-पिता से पूछताछ या जांच नहीं की गई है। इस न्यायालय को ध्यान में रखते हुए, पीडब्लू-2 केवल एक संयोग गवाह है, जिसकी उस समय मौके पर उपस्थिति संतोषजनक रूप से समझाई नहीं गई है, इसलिए यह ध्यान में रखते हुए कि वह असामान्य रूप से लंबे समय तक यानी साढ़े तीन महीने से अधिक समय तक चुप रहा, उसकी गवाही किसी भी श्रेय के योग्य नहीं है। इस न्यायालय को ध्यान में रखते हुए, अवर न्यायालयों ने उनकी गवाही पर भरोसा करके गलती की। [पैरा **25**] [**22-बी-ई**]

डी.

ई.

एफ.

**4.** जहाँ तक पीडब्लू-5 की गवाही का संबंध है, वह भी एक संयोग गवाह है। जब एक संयोग गवाह की गवाही पर भरोसा किया जा सकता है, तो कानून का निपटारा किया जाता है, जिसका अर्थ है कि एक संयोग गवाह के साक्ष्य के लिए बहुत सतर्क और करीबी जांच की आवश्यकता होती है और एक संयोग गवाह को घटना के स्थान पर अपनी उपस्थिति की पर्याप्त व्याख्या करनी चाहिए। एक संयोग गवाह की गवाही जिसकी घटना स्थल पर उपस्थिति संदिग्ध बनी हुई है, को खारिज अभिसाक्ष्य दिया जाना चाहिए। उस विषम समय ए में मौके पर उनकी उपस्थिति के लिए पीडब्लू-5 द्वारा दिया गया स्पष्टीकरण

जी.

एच.

4 सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट [2023] 7 एस. सी. आर.

गलत प्रतीत होता है। पीडब्लू-5 के अनुसार, उन्हें पेट खराब हो रहा था, इसलिए, एक फिल्म का नाइट शो देखते हुए, प्रकृति के आह्वान में भाग लेने के लिए, वह सिनेमा हॉल से बाहर आए और जब वे खुद को शांत कर रहे थे, तो उन्हें घटना को देखने का मौका मिला। यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि उस सिनेमा हॉल में एक ग्राम विक्रेता, जांच अधिकारी (पीडब्लू-10) और पीडब्लू-7 ने बयान दिया है कि सिनेमा हॉल में शौचालय हैं जहां उनके उपयोग के लिए कोई पैसा नहीं लिया जाता है। यह पीडब्लू-5 के इस स्पष्टीकरण को गलत साबित करता है कि वह खुद को शांत करने के लिए सिनेमा हॉल से बाहर गए थे क्योंकि सिनेमा हॉल शौचालय के उपयोग के लिए पैसे लेता था। अन्यथा भी, पीडब्लू-10 ने अपने अभिसाक्ष्य में कहा था कि

उसे वह स्थान नहीं दिखाया गया था जहाँ पीडब्लू-5 खुद को शांत करने के लिए बैठा था।

**[पारस 26-27] [22-F-H; 23-A-C]**

बी.

सी.

**5.** इसके अलावा, पीडब्लू-5 सुसंगत नहीं है क्योंकि, धारा **161 Cr.P.C** के तहत अपने अभिसाक्ष्य में, जिसके साथ उनका अभिसाक्ष्य के दौरान सामना किया गया था, उन्होंने यह कहते हुए दो आरोपी व्यक्तियों के साथ 'जी' को दोषी ठहराया था कि तीनों मृतक के साथ मौजूद थे, लेकिन न्यायालय में अपने अभिसाक्ष्य के दौरान, उन्होंने कहा कि 'जी' मौजूद नहीं था। वह उस स्थान के संबंध में भी सुसंगत नहीं है जहाँ उनका बयान दर्ज किया गया था। एक जगह वह कहता है कि यह पुलिस स्टेशन में दर्ज किया गया था और दूसरी जगह वह कहता है कि यह उसकी दुकान पर दर्ज किया गया था। **[पैरा 28] [23-सी-डी]**

डी.

ई.

**6.** मामले की एक अन्य महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि पीडब्लू-10 के अनुसार, पीडब्लू-5 का बयान उसके द्वारा पीडब्लू 5 के घर पर **01.11.2001** पर दर्ज किया गया था। पुलिस द्वारा पीडब्लू-5 के आवास पर उसका बयान दर्ज करने के लिए जाने का क्या कारण था, अभियोजन पक्ष द्वारा इसका खुलासा नहीं किया गया है। इस न्यायालय को यह समझ में नहीं आता कि पुलिस पीडब्लू-5 के आवास पर उसका बयान दर्ज करने के लिए क्यों जाएगी, जबकि प्राथमिकी में अपराध स्थल पर पीडब्लू-5 की उपस्थिति या घटना के बारे में उसकी जानकारी के बारे में कोई खुलासा नहीं किया गया है। ये सभी परिस्थितियाँ इस बात पर संदेह पैदा करती हैं कि क्या जंगल में शव मिलने पर, अभियुक्तों को तथ्यों से परिचित व्यक्तियों से प्राप्त जानकारी के बजाय संदेह के आधार पर पुलिस के कहने पर फंसाया गया था। **[पैरा 29] [23-डी-एफ]**

एफ.

जी.

**7.** पीडब्लू-2 और पीडब्लू-5 की गवाही का सावधानीपूर्वक और उचित सावधानी के साथ मूल्यांकन करने पर, जैसा कि मामले के तथ्यों में आवश्यक है, उनकी गवाही ए को बनाए रखने के लिए हमारे विश्वास को प्रेरित नहीं करती है।

एच.

दृढ़ विश्वास। दुर्भाग्य से, अवर न्यायालयों ने इसे स्थापित कानूनी सिद्धांतों के आधार पर परीक्षण किए बिना, इसे सुसमाचार सत्य के रूप में स्वीकार कर लिया, जिसके परिणामस्वरूप न्याय की गंभीर विफलता हुई। इसलिए, यह न्यायालय यह निष्कर्ष निकालता है कि अभियोजन पक्ष उचित संदेह से परे यह साबित करने में विफल रहा है कि मृतक को आखिरी बार संबंधित समय पर घटनास्थल के पास आरोपी के साथ जीवित देखा गया था। [पैरा **30**] [23-जी-एच; 24-ए]

बी.

**8.** जहाँ तक अभियुक्त की गिरफ्तारी के समय उसके व्यक्ति से देसी पिस्तौल और चाकू की बरामदगी का संबंध है, वही निम्नलिखित कारणों से हमारे विश्वास को प्रेरित नहीं करता है- पीडब्लू-**10** के अनुसार, जब वह संदिग्धों/अभियुक्तों की तलाश कर रहा था, तो उसे एक मुखबिर से जानकारी मिली कि अभियुक्तों को **1600** बजे एक निर्दिष्ट स्थान पर आना था। लेकिन, उक्त जानकारी की प्राप्ति का कोई रिकॉर्ड नहीं है, भले ही कहा जाता है कि यह कार्रवाई से कुछ घंटे पहले प्राप्त हुई थी। यह मानते हुए कि ऐसी जानकारी प्राप्त हुई थी, एक सार्वजनिक गवाह को शामिल करने का कोई प्रयास नहीं प्रतीत होता है, भले ही पीडब्लू-**10** के बयान के अनुसार एक इलाका उस स्थान से सिर्फ **200** मीटर की दूरी पर था। अंत में, सबसे दिलचस्प बात यह है कि शस्त्र अधिनियम के तहत दंडनीय अपराध से संबंधित मामले की जांच करने वाले जांच अधिकारी ने **06.12.2001** पर गिरफ्तारी/बरामदगी के स्थान की योजना तैयार की, भले ही गिरफ्तारी कथित रूप से **24.11.2001** पर प्रभावित हुई थी, जो मामले के तथ्यों से पता चलता है कि यह औपचारिकता को पूरा करने की कवायद थी। इसके अलावा, स्थल योजना उस स्थान का खुलासा नहीं करती है जहां जीप को आरोपी पर घात लगाने के लिए जंगल में छिपाया गया था। ऊपर उल्लिखित परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए, इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि 'एस' को प्राथमिकी में संदिग्ध के रूप में नामित नहीं किया गया था और उसका नाम बाद में पीडब्लू-**5** के बयान में सामने आया, जिसका बयान उसी दिन उसके आवास पर दर्ज किया गया था, भले ही, उसे प्राथमिकी में गवाह के रूप में उद्धृत नहीं किया गया था, पीडब्लू-**1** के बयान को ध्यान में रखते हुए कि पुलिस ने उसे 'एस' का संकेत देते हुए दूसरी रिपोर्ट प्रस्तुत करने के लिए कहा था, इस न्यायालय का विचार है कि पुलिस ने 'एस' को फंसाने में असाधारण रुचि दिखाई थी और इसलिए, उपरोक्त सभी कारणों से, अपीलार्थियों से दिखाई गई बंदूक और चाकू की कथित बरामदगी हमारे विश्वास को प्रेरित नहीं करती है। इस न्यायालय के विचारशील दृष्टिकोण से, दोषसिद्धि को बनाए रखने के लिए ऐसी वसूली पर भरोसा करना असुरक्षित होगा। जहाँ तक फोरेंसिक रिपोर्ट/बैलिस्टिक रिपोर्ट ए का संबंध है

सी.

डी.

ई.

एफ.

जी.

एच.

6 सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट [2023] 7 एस. सी. आर.

संबंधित है, यह 'एस' को भी नहीं बताया गया है, जिनसे देशी पिस्तौल जब्त की गई थी, **Cr.P.C** की धारा **313** के तहत उनका बयान दर्ज करते समय, इसलिए, किसी भी स्थिति में, इसे विचार से बचना होगा।**[पारस 31-32] [24-B-G]9.** अभियोजन पक्ष के साक्ष्य की कड़ी जांच करने और ऊपर चर्चा किए गए स्थापित कानूनी सिद्धांतों के आधार पर उनका परीक्षण करने पर, यह न्यायालय साक्ष्य को अभियुक्त अपीलार्थियों की दोषसिद्धि को बरकरार रखने के लिए विश्वास प्रेरक नहीं पाता है। अवर न्यायालयों सही कानूनी सिद्धांतों को लागू करके साक्ष्य का उचित मूल्यांकन और परीक्षण करने में विफल रही हैं। ऐसी परिस्थितियों में, नीचे दिए अवर न्यायालयों के निर्णयों को अपास्त करना जा सकता है। अपीलार्थियों उन सभी आरोपों से बरी हो जाते हैं जिनके लिए उन पर मुकदमा चलाया गया है और उन्हें दोषी ठहराया गया है।**[पैरा 33] [25-ए-सी]**

बी.

सी.

काली राम बनाम हिमाचल प्रदेश राज्य **(1973) 2 एससीसी 808:[1974] 1 एससीआर 722;** राजेश यादव और एक अन्य बनाम उत्तर प्रदेश राज्य **(2022) 12 एससीसी 200;** जरनैल सिंह और अन्य बनाम पंजाब राज्य **(2009) 9 एससीसी 719:**

डी.

**[2009] 13 एस. सी. आर. 774-संदर्भित।संदर्भित निर्णय**

**[1974] 1 एससीआर 722**

पैरा **23 (2022) 12 एस. सी. सी. 200 पैरा 26 [2009] 13 एस. सी. आर. 774 पैरा 26** को संदर्भित

ई.

आपराधिक अपील न्यायनिर्णय:2011 की आपराधिक अपील No.511।

2004 के सी. आर. एल. ए. No.54 में नैनीताल में उत्तरांचल उच्च न्यायालय के दिनांकित 07.04.2010 के निर्णय और आदेश से।

एफ.

के साथ

2011 की आपराधिक अपील No.2345।

गोपाल झा, एड. (न्यायमित्र), सुश्री अंकिता गौतम, डॉ. ए. के. गौतम, रवि मेहरोत्रा, नितिन जुयाल, अशोक माथुर, संकेत, सुश्री बबीता संत, अधिवक्तागण अपीलार्थी के लिए।

जी.

जतिंदर कुमार भाटिया, कृष्णम मिश्रा, परम कुमार मिश्रा, राजीव कुमार दुबे, आशिवन मिश्रा, कमलेंद्र मिश्रा, अधिवक्तागण प्रत्यर्थी के लिए।

एच.

7

रावी मंडल बनाम उत्तरखंड राज्य

ए.

न्यायालय का निर्णय इसके द्वारा दिया गया था

मनोज मिश्रा, जे.

1. ये दोनों अपीलें नैनीताल में उत्तराखंड उच्च न्यायालय के फैसले और आदेश (संक्षेप में "उच्च न्यायालय"), दिनांक 07.04.2010 के खिलाफ हैं, जिसमें अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश/फास्ट ट्रैक कोर्ट हल्द्वानी, नैनीताल (संक्षेप में "ट्रायल कोर्ट") दिनांक 28.01.2004 के फैसले और आदेश के खिलाफ दायर आपराधिक अपील Nos.54 और 2004 की 59 को खारिज कर दिया गया है, और इस प्रकार, अपीलार्थियों को दी गई दोषसिद्धि और सजा की पुष्टि की गई है।(i) भारतीय दंड संहिता, 1860 (संक्षिप्त में "आई. पी. सी.") की धारा 34 सहपठित धारा 302 के तहत आजीवन कारावास के साथ-साथ सत्र परीक्षण (एस. टी.) में आई. पी. सी. की धारा 201 के तहत एक वर्ष का आर. आई. No.93/2002 (राज्य बनाम शब्बीर अहमद और एक अन्य); (ii) एस. टी. में अपीलार्थी शब्बीर को शस्त्र अधिनियम की धारा 25 के तहत Rs.500 के जुर्माने के साथ एक साल का आर. आई. 2002 का No.104 (राज्य बनाम शब्बीर अहमद); और (iii) संबंधित एस. टी. में अपीलार्थी रवि मंडल को शस्त्र अधिनियम की धारा 4/25 के तहत Rs.500 के जुर्माने के साथ एक वर्ष का आर. आई. 2002 का No.105 (राज्य बनाम रवि मंडल)।

बी.

सी.

डी.

परिचयात्मक तथ्य:

2. 01.11.2001 पर, छोटू उर्फ सुरजीत (मृतक) के पिता मान सिंह (पीडब्लू-1) ने सरकारी इंटर कॉलेज से 150 मीटर पश्चिम में एक जंगल में अपने बेटे का शव मिलने पर, पी. एस. में प्रथम सूचना रिपोर्ट (एफ. आई. आर.) दर्ज कराई। लालकुआं, हल्द्वानी, जिला नैनीताल में लगभग 7:30 बजे यह आरोप लगाते हुए कि मृतक अपने दोस्तों गोविंद और रवि बंगाली (बाद में रवि मंडल के रूप में पहचाना गया) के साथ 2100 बजे था; गोविंद, एक अपराधी, अपने बेटे को गलत रास्ता चुनने के लिए प्रभावित कर रहा था; इसलिए, उसे संदेह है कि इन लोगों ने उसके बेटे की हत्या कर दी है और उसके शव को जंगल में छिपा दिया है। इसके बाद, 10.11.2001 पर, पीडब्लू-1 ने पुलिस को एक लिखित जानकारी देते हुए कहा कि यह गोविंद नहीं बल्कि शब्बीर था जो उस दुर्भाग्यपूर्ण रात को रवि और एक मजहर खान के साथ मृतक के साथ था। इस लिखित जानकारी में यह आरोप लगाया गया था कि बबलू (पीडब्लू -7) उसे गोविंद का नाम लेने के लिए गुमराह किया था।

ई.

एफ.

3. जाँच के दौरान, पुलिस ने दो अभियुक्तों, अर्थात् अपीलार्थियों की गिरफ्तारी की और शब्बीर से 12 बोर की देसी पिस्तौल, एक जिंदा कारतूस और रवि मंडल से एक चाकू बरामद होने का खुलासा किया, जिससे दोनों अभियुक्तों के खिलाफ शस्त्र अधिनियम के तहत दो अलग-अलग मामले सामने आए।

जी.

4. जाँच के पूरा होने पर तीन आरोप पत्र रखे गए जिनसे तीन सत्र परीक्षण हुए जो एक दूसरे से जुड़े हुए थे।

एच.

8

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 7 एस सी आर।

और एक सामान्य निर्णय द्वारा निर्णय लिया गया, जिसकी उच्च न्यायालय द्वारा पुष्टि की गई है।

अभियोजन साक्ष्य

5. इस मामले में आगे दी गई दलीलों की सराहना करने के लिए, अभियोजन पक्ष के गवाहों की गवाही पर संक्षेप में ध्यान देना उचित होगा। अभियोजन पक्ष ने 10 गवाहों से पूछताछ की, उनकी गवाही का सार इस प्रकार है:

बी.

(i) पीडब्लू-1-मान सिंह-मुखबिर (मृतक का पिता) वह हत्या का चश्मदीद गवाह नहीं है। हालाँकि, उन्होंने 01.11.2001 पर प्राथमिकी दर्ज करना साबित किया और कहा कि-शाम को बबलू (PW-7) अपने आवास पर आया और उसे बताया कि मृतक रवि बंगाली और गोविंद भोजन मांग रहे थे और उन्हें अपने लिए भोजन लाने के लिए भेज दिया है; उस अनुरोध पर, PW-1 की पत्नी (उर्मिला देवी-PW-3) ने खाना पकाया, पैक किया और बबलू को दिया, जो भोजन के साथ चला गया; अगले दिन, उसे पता चला कि उसके बेटे का शव जंगल में पड़ा हुआ था; फिर वह उस स्थान पर गया, शव को लालकुआं पुलिस स्टेशन लाया और रिपोर्ट दर्ज कराई; बाद में, जब उसे पता चला कि गोविंद अपने बेटे के साथ नहीं था केए-2) 10.11.2001 पर पुलिस को। जिरह के दौरान, पीडब्लू-1 ने स्वीकार किया कि उसके बेटे (मृतक) के खिलाफ तीन या चार आपराधिक मामले थे, जिसमें वह जमानत पर था।

सी.

डी.

ई.

एफ. आई. आर. दर्ज करने की तारीख की घटनाओं के क्रम के संबंध में, पीडब्लू-1 ने कहा कि-दो लोगों के साथ एक सिपाही सुबह उसे सूचित करने आया कि उसके बेटे का शव जंगल में पड़ा है; सूचना मिलने पर वह उस स्थान पर गया और शव को एफ. आई. आर. दर्ज करने के लिए पुलिस स्टेशन लाया, जिसके बाद शव को सील कर दिया गया और शव परीक्षण के लिए हल्द्वानी अस्पताल भेज दिया गया। उन्होंने यह भी कहा कि टिफिन बॉक्स की बरामदगी से संबंधित कागजात; पुलिस स्टेशन में खून से सना मिट्टी आदि का संग्रह तैयार किया गया और उन्होंने उन कागजातों पर पुलिस स्टेशन में ही हस्ताक्षर किए। पीडब्लू-1 ने यह भी स्पष्ट किया कि दूसरी रिपोर्ट (यानी एक्स। के. ए.-2) को पुलिस स्टेशन में उप-निरीक्षक द्वारा निर्देशित किया गया था और उसे जो कुछ भी बताया गया था, वह उसे लिख देता था।

एफ.

जी.

एच.

9

रावी मंडल बनाम उत्तरखंड राज्य [मनोज मिश्रा, जे.]

ए.

जिरह के अंतिम चरण में, पीडब्लू-1 ने कहा कि उसने उपनिरीक्षक को गोविंद के साथ वित्तीय लेनदेन के बारे में और गोविंद द्वारा पैसे वापस नहीं करने के बारे में भी सूचित किया था, जिससे दुश्मनी पैदा हो गई।

(ii) पी. डब्ल्यू.-2-चंदन सिंह ने अपदस्थ किया कि-(ए) वह शब्बीर अहमद और रवि मंडल को जानता था; (बी) वे मृतक के साथ लगभग 1900 बजे आई. डी. 1 पर उनकी दुकान पर आए थे और वहां से वे सिनेमा हॉल की ओर बढ़े; (सी) बाद में, आई. डी. 1 की रात में, उन्होंने आरोपी-अपीलकर्ताओं को जंगल से निकलते और तेजी से चलते देखा; (डी) उस समय, शब्बीर के हाथों पर खून के धब्बे थे और रवि के कपड़ों पर भी खून के धब्बे थे, (ई) पी. डब्ल्यू.-2 को देखकर वे घबरा गए, शब्बीर ने पी. डब्ल्यू.-2 को यह कहकर धमकी दी कि अगर पी. डब्ल्यू.-2 ने यह खुलासा किया कि उसके पास क्या है।

बी.

सी.

डी.

वहाँ अपनी उपस्थिति का कारण दिखाने के लिए, रात के उस विषम समय में, पीडब्लू-2 ने कहा कि-उसके माता-पिता का खट्टा में एक अलग घर है, जहाँ वह सप्ताह में कम से कम एक बार जाता है; उस रात, रात का खाना खाने के बाद, अपने माता-पिता के घर से लौटते हुए और अपने घर/दुकान की ओर बढ़ते हुए, लगभग 0030 बजे, उसने घटना देखी। जिरह के दौरान, पीडब्लू-2 ने कहा कि-उसकी दुकान उसके घर के एक कमरे से चलती है; यह 0500 बजे से 2300 बजे तक खुली रहती है; उसके घर में 3 कमरे हैं जहाँ वह अपनी पत्नी और पांच बेटों के साथ रहता है; उसके रात के खाने का सामान्य समय 2100 घंटे है।

ई.

एफ.

पीडब्लू-2 को एक सुझाव दिया गया था कि रवि (अपीलकर्ताओं में से एक) की मां पीडब्लू-2 की पड़ोसी है, जिसकी जमीन पर पीडब्लू-2 ने उसकी दुकान बनाई थी। पीडब्लू-2 ने इस सुझाव को अस्वीकार कर दिया था।

जी.

पुलिस को जानकारी देने में देरी के संबंध में, पीडब्लू-2 ने कहा कि वह इस घटना से भयभीत था और जब अभियुक्तों को गिरफ्तार किया गया, तो वह अपना बयान देने का साहस जुटा सका। जिरह के दौरान, ए

एच.

## सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 7 एस सी आर।

पीडब्लू-2 ने स्वीकार किया कि उसे आबकारी अधिनियम की धारा 60 के तहत गिरफ्तार किया गया था और वह जमानत पर है। उन्होंने इस सुझाव के प्रति अज्ञानता का नाटक किया कि उनके जमानत बांड की व्यवस्था छोटू के माता-पिता द्वारा की गई थी।

(iii) पीडब्लू-3-उर्मिला देवी-मृतक की माँ उन्होंने साबित किया कि 31.10.2001 पर, बबलू (पीडब्लू-7), जो सिनेमा हॉल में काम करता था, मृतक के लिए भोजन लाने के लिए उसके घर आया था, परिणामस्वरूप, उसके द्वारा भोजन पकाया और आपूर्ति की गई थी।

बी.

जिरह के दौरान, उसने चंदन (पीडब्लू-2) की जमानत के लिए मुचलका होने से इनकार किया। हालाँकि, उसने स्वीकार किया कि चंदन उसके घर जाता था।

सी.

((iv) पीडब्लू-4-श्रीमती. मिथिलेश (गोविंद की पत्नी) पीडब्लू-4 ने घटना के बारे में कुछ भी स्पष्ट नहीं बताया, सिवाय इसके कि शब्बीर की अपने पति के साथ दुश्मनी थी और छोटू की हत्या से 8 से 10 दिन पहले, रवि बंगाली और शब्बीर ने अपने पति को फोन किया था; परिणामस्वरूप, उसका पति चला गया, लेकिन उसके बाद वापस नहीं आया; बाद में, उसे पुलिस से जानकारी मिली कि उसके पति की हत्या कर दी गई है और अपराधी पकड़े गए हैं।

डी.

ई.

जिरह के दौरान उसने स्वीकार किया कि पुलिस छोटू की हत्या के दो-तीन दिन बाद उसके घर आई थी, लेकिन उस समय उसने पुलिस को सूचित नहीं किया था कि गोविंद और छोटू आरोपी व्यक्तियों के साथ गए थे। उसने यह भी स्वीकार किया कि पुलिस ने उससे कोई पूछताछ नहीं की और उसने अपने पति की हत्या के संबंध में कोई शिकायत दर्ज नहीं की।

एफ.

(v) पीडब्लू-5-महेंद्र खुराना उन्होंने कहा कि-आईडी1 पर, जब वह सिनेमा हॉल में एक रात्रि कार्यक्रम देख रहे थे, तो उन्हें प्रकृति के आह्वान पर भागते हुए बाहर जाना पड़ा, फिर उन्होंने छोटू (मृतक), रवि बंगाली और शब्बीर को जंगल की ओर जाते देखा; 2-3 मिनट बाद, उन्हें गोली की आवाज सुनाई दी और 5-7 मिनट बाद, रवि बंगाली और शब्बीर को एक-दूसरे से भागते और बात करते हुए देखा गया कि उन्होंने छोटू के साथ अपना खाता सुलझा लिया है क्योंकि वह उनके लिए एक उपद्रव बन गया था।

जी.

एच.

11

रावी मंडल बनाम उत्तरखंड राज्य [मनोज मिश्रा, जे.]

पैसे की उसकी लगातार मांग के कारण पीडब्लू-5 ने कहा कि उसने रात में किसी को भी इस तथ्य का खुलासा नहीं किया, लेकिन सुबह उसे पता चला कि छोटू की हत्या कर दी गई है।

जिरह के दौरान, उन्होंने स्वीकार किया कि हालांकि सिनेमा हॉल में शौचालय की सुविधा उपलब्ध है, लेकिन प्रभारी के रूप में; इसलिए, वह खुद को शांत करने के लिए बाहर गए। उन्होंने कहा कि घटना की रात के बाद सुबह उनका बयान दर्ज किया गया था और उस उद्देश्य के लिए उन्हें कांस्टेबल द्वारा बुलाया गया था। उनके पिछले बयान का सामना करने पर कि उन्होंने गोविंद, छोटू, रवि बंगाली और शब्बीर को जंगल की ओर जाते देखा था, पीडब्लू-5 ने कहा कि उन्होंने गोविंद को छोड़कर सभी के नामों का खुलासा किया था। हालाँकि, उसने स्वीकार किया कि उसने पुलिस को उस जगह का खुलासा नहीं किया जहाँ वह उस रात खुद को शांत करने के लिए बैठा था।

बी.

सी.

(vi) पीडब्लू-6-हनुमान प्रसाद ने कहा कि-आईडी1 पर लगभग आधी रात को जब वे डिपो नं.6, सिनेमा हॉल के सामने, उन्होंने तीन व्यक्तियों, छोटू, रवि बंगाली और शब्बीर को एक-दूसरे से बात करते हुए और जंगल की ओर जाते हुए देखा; अगले दिन सुबह, उन्हें पता चला कि छोटू की हत्या कर दी गई है। उन्होंने इस बात से इनकार किया कि उन्होंने शब्बीर को मृतक पर गोली चलाते देखा था। इस स्तर पर, अभियोजन पक्ष ने उसे शत्रुतापूर्ण घोषित कर दिया और उससे जिरह की मांग की।

डी.

ई.

अभियोजन पक्ष द्वारा जिरह के दौरान, उसने इस बात से इनकार किया कि उसने पुलिस के सामने बयान दिया था कि शब्बीर ने अपने साथी को गोली मार दी थी और रवि ने उसका पैर पकड़ रखा था।

एफ.

बचाव पक्ष द्वारा जिरह के दौरान, उसने कहा कि उसने घटना को नहीं देखा था और उसने पुलिस को यह भी सूचित किया था कि उसने घटना को नहीं देखा था।

(vii) पीडब्लू-7-बबलू उन्होंने कहा कि-आई. डी. 1 पर, वह छोटू से सिनेमा हॉल के द्वार पर मिले; छोटू ने उनसे अपने आवास से उनके लिए भोजन लाने के लिए कहा; उस समय छोटू के साथ कोई मौजूद नहीं था। पीडब्लू-7 ने कहा कि वह छोटू के आवास पर आया, खाना लिया और तीन डिब्बों में लाया लेकिन जब ए

जी.

एच.

12

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 7 एस सी आर।

वह भोजन लेकर वहाँ पहुँचा, उसने किसी को नहीं देखा, इसलिए उसने वहाँ भोजन रखा। अगले दिन सुबह उसे पता चला कि छोटू को मार दिया गया है। इस स्तर पर, अभियोजन पक्ष ने उसे शत्रुतापूर्ण घोषित कर दिया और उससे जिरह की अनुमति मांगी।

अभियोजन पक्ष द्वारा प्रतिपरीक्षा के दौरान, पीडब्लू-7 ने कागज पर अपने हस्ताक्षर No.3/15 को स्वीकार किया, जिसे एक्स चिह्नित किया गया था। केए-6। उसने यह भी स्वीकार किया कि उसने उप-निरीक्षक को एक बयान दिया था, लेकिन इस बात से इनकार किया कि उसने छोटू को शब्बीर और रवि बंगाली के साथ 31.10.2001 पर देखा था।

बी.

बचाव पक्ष के कहने पर प्रतिपरीक्षा के दौरान, पीडब्लू-7 ने कहा कि वह सिनेमा हॉल में चना (चना) बेचता था; सिनेमा हॉल में शौचालय थे और उन शौचालयों के उपयोग के लिए कोई पैसा नहीं लिया जाता है। उन्होंने यह भी कहा कि इस मामले की जांच के दौरान पुलिस ने उन्हें पीटा था और उन्हें तीन दिनों के लिए पुलिस लॉक-अप में रखा था। (viii) पीडब्लू-8-डॉ. अनिल चंद्र के साह (ऑटोप्सी सर्जन) ने शव परीक्षण रिपोर्ट को साबित किया और कहा कि मृतक की मृत्यु पूर्व शव परीक्षण बंदूक की गोली के परिणामस्वरूप सदमे और रक्तस्राव के कारण हुई थी।

सी.

डी.

ई.

(ix) पीडब्लू-9-उप-निरीक्षक नन्हे लाल (शस्त्र अधिनियम के तहत मामलों के जांच अधिकारी)

उन्होंने जाँच रिपोर्ट को साबित किया (उदा. केए-7 ए) और शव परीक्षण से संबंधित कागजात (Ex.K-8 से के-10)। उन्होंने शस्त्र अधिनियम की धारा 25 के तहत अपराध मामले की जांच के

विभिन्न चरणों और शस्त्र अधिनियम की धारा 3 के तहत अपराध मामले की जांच के साथ-साथ आरोप पत्र प्रस्तुत करने और शस्त्र अधिनियम के प्रावधानों के तहत अभियोजन के लिए मंजूरी प्राप्त करने के विभिन्न चरणों को भी साबित किया।

एफ.

जिरह के दौरान, पीडब्लू-9 ने कहा कि उसने उस स्थान की स्थल योजना तैयार की जहाँ से अभियुक्तों को गिरफ्तार किया गया था और हथियार बरामद किया गया था। उन्होंने यह कहते हुए स्थल योजना तैयार करने में देरी की व्याख्या करने की मांग की कि वह अन्य मामलों में व्यस्त थे।

जी.

(x) पीडब्लू-10-एस. आई. प्रमोद कुमार शाह (हत्या मामले के जांच अधिकारी)

एच.

13

रावी मंडल बनाम उत्तरखंड राज्य [मनोज मिश्रा, जे.]

ए.

उन्होंने साबित किया-एफ. आई. आर. का पंजीकरण; पीडब्लू-9 के साथ मौके पर जाना; मौके का निरीक्षण; स्थल योजना की तैयारी (Ex.Ka-15); उठाने:खून से सना हुआ मिट्टी/सादा मिट्टी, वीडियो सीजर मेमो एक्स। केए-4, और घटनास्थल से एक खाली 12 बोर का कारतूस, जब्ती ज्ञापन Ex.Ka-5 के माध्यम से, जिसमें से पीडब्लू-1 गवाहों में से एक है; पूछताछ करना; शिकायतकर्ता मान सिंह (पीडब्लू-1), बबलू (पीडब्लू-7) और महेन्द्र खुराना (पीडब्लू-5) का बयान दर्ज करना; टिफिन का हिरासत ज्ञापन तैयार करना;-श्रीमती का बयान दर्ज करना। उर्मिला देवी (पीडब्लू-3) 02.11.2001 पर, मिथिलाश (पीडब्लू-4) 03.11.2001 पर, हनुमान (पीडब्लू-6) 07.11.2001 पर; मान सिंह द्वारा 10.11.2001 पर आवेदन जमा करना; और आरोप पत्र (EX.Ka-16) जमा करना। उन्होंने सामग्री प्रदर्शनी आदि का भी निर्माण किया। उपरोक्त के अलावा, उन्होंने कहा कि आरोपी शब्बीर और रवि मंडल फरार थे, इसलिए दंड प्रक्रिया संहिता, 1973 (संक्षेप में "Cr.P.C") की धारा 82 के तहत कार्यवाही करने के लिए आवेदन दायर किया गया था। इसके बाद, 1530 बजे आरोपी शब्बीर और रवि मंडल को क्रमशः 12 बोर की देसी पिस्तौल और चाकू के साथ गिरफ्तार किया गया। उन्होंने गिरफ्तारी ज्ञापन को पूर्व के रूप में साबित किया। केए-17।

बी.

सी.

डी.

पीडब्लू-10 ने कहा कि आईडी1 पर देसी पिस्तौल, घटनास्थल से बरामद खाली कारतूस और गिरफ्तारी के समय जब्त किए गए जीवित कारतूस को जांच के लिए फोरेंसिक साइंस लेबोरेटरी (एफएसएल), आगरा भेजा गया और इसकी रिपोर्ट प्रस्तुत की गई है, जिसके अनुसार, शब्बीर से बरामद पिस्तौल से ईसी-1 (शव के पास पाया गया खाली कारतूस) दागा गया था। जिरह के दौरान, आरोपी शब्बीर के कहने पर, पीडब्लू-10 ने कहा कि-प्राथमिकी में शब्बीर का नाम नहीं था; पीडब्लू-10 लगभग 0800 बजे घटना स्थल पर पहुंचा; शव घटनास्थल पर पड़ा था; मान सिंह का बयान 01.11.2001 पर मौके पर दर्ज किया गया था; मान सिंह ने उसे सूचित किया था कि छोटू (मृतक) घटना से पिछले 10-12 दिनों से घर नहीं आ रहा था, हालांकि, छोटू के बारे में पहले कोई जानकारी नहीं दी गई थी; महेंद्र खुराना (पीडब्लू-5) ने बताया था कि रात में उसने गोविंद को रवि, छोटू और शब्बीर के साथ जंगल की ओर जाते देखा था; मान सिंह ने 01.11.2001 पर कहा था कि गोविंद ने ए उधार लिया था।

ई.

एफ.

जी.

एच.

14

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 7 एस सी आर।

छोटू से Rs.16,000/-; मान सिंह (PW-1) का बयान तीन बार दर्ज किया गया; चंदन सिंह (PW-2) ने 18.02.2002 पर एक हलफनामा दिया, इससे पहले कि वह नहीं आए; उर्मिला देवी, जिनका बयान उनके आवास पर 02.11.2001 पर दर्ज किया गया था, ने यह खुलासा नहीं किया कि PW-2 ने आरोपी व्यक्तियों को देखा था; और मिथिलाश (PW-4) का बयान दो बार दर्ज किया गया था, एक 03.11.2001 पर और दूसरा 05.12.2001 पर। पीडब्लू-10 ने यह भी कहा कि उनकी गिरफ्तारी पर शब्बीर और रवि ने कबूल किया था कि छोटू को मारने से पहले उन्होंने गोविंद को मार डाला था। पीडब्लू-10 ने आगे कहा कि महेंद्र खुराना (पीडब्लू-5) का बयान उनके आवास पर 01.11.2001 पर दर्ज किया गया था और पीडब्लू-5 ने उस जगह का खुलासा नहीं किया था जहां वह उस दुर्भाग्यपूर्ण रात को आराम करने के लिए बैठे थे।

बी.

सी.

दो अभियुक्तों की गिरफ्तारी के दिन की घटनाओं के क्रम के संबंध में, पीडब्लू-10 ने कहा कि- 24.11.2001 पर, उसे एक मुखबिर से जानकारी मिली थी कि 1600 बजे अभियुक्त व्यक्तियों को

उनके घर आना था; उक्त जानकारी लगभग 1430 बजे प्राप्त हुई थी; सूचना मिलने पर, पीडब्लू-10 और उसकी टीम अपनी जीप में मौके पर पहुंची, जो कुछ दूरी पर जंगल में छिपी हुई थी; 10-15 मिनटों के बाद, पीडब्लू-10 ने अभियुक्त व्यक्तियों को आते देखा और तदनुसार उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। पीडब्लू-10 ने स्वीकार किया कि उसने किसी भी सार्वजनिक गवाह को शामिल करने की कोशिश नहीं की क्योंकि जिस स्थान पर गिरफ्तारी की गई थी वह इलाके से 200 मीटर दूर था। पीडब्लू-10 ने यह भी कहा कि गिरफ्तारी और बरामदगी के स्थान की स्थल योजना उनके कहने पर 06.12.2001 पर तैयार की गई थी। पीडब्लू-10 ने इन सुझावों का खंडन किया कि- शिकायतकर्ता द्वारा शव को पुलिस स्टेशन लाया गया था; दूसरी शिकायत (Ex.Ka-2) उसके कहने पर लिखी गई थी; और आरोपी को पुलिस स्टेशन में बैठे हुए झूठे दस्तावेज तैयार करके गलत तरीके से फंसाया गया था।

डी.

ई.

एफ.

जी.

पीडब्लू-10 ने स्वीकार किया कि-मृतक की आपराधिक पृष्ठभूमि थी और वह कई बार जेल गया था; महेंद्र खुराना (पीडब्लू-5) अपना बयान दर्ज कराने के लिए उसके पास नहीं आया था, बल्कि पीडब्लू-10 अपना बयान दर्ज करने के लिए उसके घर गया था; महेंद्र खुराना का बयान मैम ए द्वारा दी गई जानकारी के चार घंटे बाद दर्ज किया गया था।

एच.

15

रावी मंडल बनाम उत्तरखंड राज्य [मनोज मिश्रा, जे.]

01.11.2011 पर सिंह (PW-1); महेंद्र खुराना ने अपने बयान में बताया था कि गोविंद भी मौजूद थे।

दंड प्रक्रिया संहिता, **1973 (Cr.P.C)** की धारा **313** के तहत वक्तव्य:-

6. धारा 313 Cr.P.C के तहत दर्ज अपने बयान में, रवि मंडल ने उन पर लगाए गए आपत्तिजनक परिस्थितियों से इनकार किया। उन्होंने चाकू की बरामदगी से भी इनकार किया और दावा किया कि उनके कब्जे से कुछ भी आपत्तिजनक बरामद नहीं हुआ है। हालाँकि, उन्होंने बचाव में कोई सबूत नहीं दिया।

बी.

7. इसी तरह, शब्बीर अहमद ने धारा 313 Cr.P.C के तहत अपने बयान में अपने खिलाफ पेश होने वाली आपत्तिजनक परिस्थितियों से इनकार किया और कहा कि उसके कब्जे से कुछ भी आपत्तिजनक बरामद नहीं हुआ। हालाँकि, ध्यान देने योग्य बात यह है कि शब्बीर से कथित रूप से बरामद पिस्तौल के उपयोग के संबंध में बैलिस्टिक विशेषज्ञ की रिपोर्ट धारा 313 Cr.P.C के तहत उसका बयान दर्ज करते समय उसे नहीं दी गई थी।

सी.

विचारण न्यायालय के नतीजे:-

डी.

8. विचारण न्यायालय ने पीडब्लू-2 (चंदन सिंह) और पीडब्लू-5 (महेन्द्र खुराना) की गवाही पर भरोसा करते हुए यह निष्कर्ष निकाला कि मृतक को आखिरी बार उस जंगल/स्थान की ओर जा रहे आरोपी के साथ जीवित देखा गया था जहां से मृतक का शव बरामद किया गया था; पीडब्लू-5 ने मृतक और दोनों अभियुक्तों के जंगल में प्रवेश करने के तुरंत बाद जंगल से गोली चलने की आवाज सुनी और इसके तुरंत बाद, आरोपी को मृतक के बिना उस स्थान से बाहर निकलते देखा। विचारण न्यायालय के अनुसार, यह एक निर्णायक परिस्थिति थी। विचारण न्यायालय ने पीडब्लू-6 सहित अन्य गवाहों की गवाही का भी उपयोग दो मुख्य गवाहों की गवाही की पुष्टि करने के लिए किया, जिसमें मृतक को आखिरी बार उस क्षेत्र में आधी रात के आसपास दो अभियुक्तों के साथ जीवित देखा गया था, जहां से अगले दिन सुबह मृतक का शव बरामद किया गया था। विचारण न्यायालय ने देखा कि उस रात चांदनी की उपस्थिति के संबंध में कोई विवाद नहीं था और आरोपी और मृतक की पहचान करने के लिए गवाहों की क्षमता को कोई चुनौती नहीं थी। विचारण न्यायालय ने यह भी देखा कि एफएसएल रिपोर्ट के अनुसार मौके से बरामद खाली कारतूस उसी पिस्तौल से दागा गया था जो शब्बीर के कब्जे से बरामद की गई थी। और चूंकि शव परीक्षण रिपोर्ट ने पुष्टि की थी कि मृतक की मृत्यु आग्नेयास्त्र के उपयोग से हुई थी, इसलिए विचारण न्यायालय ने निष्कर्ष निकाला कि यह संदेह से परे साबित हो गया था कि आरोपी व्यक्तियों ने मृतक की हत्या की थी और सबूत छिपाने के लिए मृतक के शरीर को जंगल में फेंक दिया था। इस प्रकार उन्हें दोषी ठहराया गया और तदनुसार सजा सुनाई गई।

ई.

एफ.

जी.

एच.

16 सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट [2023] 7 एस. सी. आर.

ए.

उच्च न्यायालय के निर्णय:-

9. उच्च न्यायालय ने अभियोजन पक्ष के साक्ष्य को विश्वसनीय और एक-दूसरे की पुष्टि करने वाला पाते हुए दोषसिद्धि को बरकरार रखा।

10. हमने अपीलार्थी रवि मंडल के लिए सुश्री अंकिता गौतम, शब्बीर के लिए न्यायमित्र श्री गोपाल झा और उत्तराखंड राज्य के लिए श्री जतिंदर कुमार भाटिया को सुना है और अभिलेख का अध्ययन विद्वान है।

बी.

अपीलार्थी रवि मंडल की ओर से प्रस्तुतियाँ:-

11. रवि मंडल की ओर से यह प्रस्तुत किया गया कि जहां तक मृतक के दो अभियुक्तों के साथ आखिरी बार देखे जाने के साक्ष्य का संबंध है, न तो पीडब्लू-1 (मृतक के पिता) और न ही पीडब्लू-3 (मृतक की मां) ने मृतक को दोनों अभियुक्तों के साथ 31.10.2001 पर देखा था। बबलू (पीडब्लू-7) ने हालांकि खुलासा किया कि 31.10.2001 पर वह छोटू (मृतक) से मिला था, लेकिन उसने दोनों अभियुक्तों में से किसी के भी उसके साथ होने के बारे में गवाही नहीं दी। जहां तक पीडब्लू-2 (चंदन सिंह) की गवाही का संबंध है, उस पर कोई भरोसा नहीं किया जाना चाहिए क्योंकि वह आरोप पत्र में प्रस्तुत गवाह नहीं है और इस बारे में कोई ठोस स्पष्टीकरण नहीं है कि उसने पहले खुलासा क्यों नहीं किया। इसके अलावा, वह एक संयोग गवाह है जिसकी मौके पर उपस्थिति का कोई उचित स्पष्टीकरण नहीं मिलता है। इसी तरह, पीडब्लू-5 भी एक संयोग गवाह है जिसका उस विषम समय पर मौके पर उसकी उपस्थिति का स्पष्टीकरण पीडब्लू-7 और पीडब्लू-10 के बयान से गलत साबित होता है। और जहाँ तक पीडब्लू-6 का संबंध है, उसे शत्रुतापूर्ण घोषित कर दिया गया है। इस प्रकार, इस बात का कोई विश्वसनीय सबूत नहीं है कि मृतक को आखिरी बार दो अभियुक्तों के साथ जीवित देखा गया था।

सी.

डी.

ई.

12. उपरोक्त के अलावा, यह तर्क दिया गया कि अभियुक्त से हथियारों की बरामदगी के संबंध में गवाही विश्वसनीय नहीं लगती है क्योंकि इसका कोई सार्वजनिक गवाह नहीं है; गिरफ्तारी और बरामदगी के स्थान की योजना कथित बरामदगी के कई दिनों बाद तैयार की गई थी जो यह सुझाव देगी कि बरामदगी और गिरफ्तारी का कोई स्थान मौजूद नहीं था, लेकिन, एक विचार के बाद, औपचारिकता को पूरा करने के लिए, स्थल योजना तैयार की गई थी।

एफ.

13. यह भी तर्क दिया गया कि गवाहों के अभिसाक्ष्य में भौतिक विसंगति है कि क्या प्राथमिकी पहले दर्ज की गई थी, या शव को पुलिस स्टेशन लाए जाने के बाद। पीडब्लू-1 के बयान से पता चलता है कि उसे पुलिस ने उसके बेटे का शव मिलने के बारे में सूचित किया था, जिसके बाद वह मौके पर

गया और शव को प्राथमिकी दर्ज करने के लिए पुलिस स्टेशन ले आया; जबकि, पुलिस गवाहों का कहना है कि ए

जी.

एच.

17

रावी मंडल बनाम उत्तरखंड राज्य [मनोज मिश्रा, जे.]

कि पीडब्लू-1 द्वारा रिपोर्ट दर्ज कराने के बाद वे मौके पर पहुंचे और मौके पर उन्होंने पूछताछ की। यह आग्रह किया गया कि यह विसंगति संदेह पैदा करती है कि क्या अभियोजन पक्ष का मामला पुलिस के कहने पर अनुमान लगाने के काम पर विकसित किया गया था। यह संदेह दोगुना हो जाता है क्योंकि पहली लिखित रिपोर्ट में गोविंद का नाम सामने आया था। और जब यह पता चला कि गोविंद की उम्र पहले ही समाप्त हो चुकी थी, तो गोविंद का नाम शब्बीर के साथ बदल दिया गया। यह तर्क दिया गया कि साक्ष्य से यह स्पष्ट है कि मृतक आपराधिक पृष्ठभूमि वाला व्यक्ति था और इसलिए, उसके कई दुश्मन हो सकते थे। इसलिए, बचाव पक्ष के वकील के अनुसार, यह एक ऐसा मामला है जहां रात में किसी ने पीडब्लू-1 के बेटे की हत्या कर दी; उसके शरीर का पता चलने पर, अनुमान के आधार पर कहानी विकसित की गई थी और इसलिए आरोपी को फंसाया गया था। यह आग्रह किया गया कि विचारण न्यायालय और उच्च न्यायालय ने अभियोजन पक्ष के साक्ष्य का ठीक से परीक्षण नहीं किया और इसलिए, नीचे दी गई दोनों अवर न्यायालयों के निर्णयों को अपास्त करना जा सकता है।

बी.

सी.

अपीलार्थी शब्बीर की ओर से प्रस्तुतियाँ:-

डी.

14. शब्बीर का प्रतिनिधित्व करने वाले विद्वान न्यायमित्र ने अपीलार्थी रवि मंडल का प्रतिनिधित्व करने वाले विद्वान अधिवक्ता द्वारा की गई दलीलों को अपनाया और कहा कि प्रारंभिक रिपोर्ट में शब्बीर का नाम नहीं था। गवाहों के बयान से पता चलता है कि गोविंद को पैसे उधार दिए गए थे। छोटू (मृतक) गोविंद से अपने पैसे वापस मांग रहा था और इसलिए, गोविंद का मकसद था। नतीजतन, संदेह के आधार पर, गोविंद के नाम का उल्लेख किया गया था, लेकिन जब यह पाया गया कि गोविंद का पता नहीं चल रहा है, या संभवतः उसकी हत्या कर दी गई थी, तो गोविंद के स्थान पर शब्बीर का नाम बदल दिया गया। ऐसी परिस्थितियों में, शब्बीर का निहितार्थ संदेह में डूबा हुआ है और अभियोजन पक्ष की कहानी जहां तक शब्बीर से संबंधित है, स्वीकार्य नहीं है। विद्वान न्यायमित्र ने दावा विद्वान कि देसी पिस्तौल की कथित बरामदगी फर्जी और झूठी है जिसका समर्थन करने के

लिए कोई सार्वजनिक गवाह नहीं है। बैलिस्टिक रिपोर्ट पर इस आधार पर भी सवाल उठाया गया है कि इस बात का कोई स्पष्टीकरण नहीं है कि देश में बनी पिस्तौल को 15.01.2002 से पहले फोरेंसिक जांच के लिए क्यों नहीं भेजा गया था, जब इसे कथित तौर पर 24.11.2001 पर बरामद किया गया था। यह भी तर्क दिया गया कि धारा 313 Cr.P.C के तहत अपना बयान दर्ज करते समय आरोपी को बैलिस्टिक रिपोर्ट नहीं दी गई है, इसलिए इसे विचार से बचना होगा।

ई.

एफ.

जी.

राज्य की ओर से प्रस्तुतियाँ:-

15. इसके विपरीत, राज्य के विद्वान अधिवक्ता ने प्रस्तुत किया कि पीडब्लू-7 ने साबित किया कि मृतक ने सिनेमा हॉल में भोजन के लिए बुलाया था; पीडब्लू-ए

एच.

18

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 7 एस सी आर।

1 और पीडब्लू-3 ने यह कहते हुए पीडब्लू-7 की पुष्टि की है कि मृतक सहित तीन व्यक्तियों के लिए भोजन की आपूर्ति की गई थी; और पीडब्लू-2 और पीडब्लू-5 ने साबित किया है कि उन्होंने मृतक और दोनों अभियुक्तों को लगभग आधी रात को उस स्थान के पास एक साथ देखा था जहाँ से अगले दिन सुबह मृतक का शव बरामद किया गया था। इसलिए, आरोपी को पकड़ने के लिए जंजीर पूरी हो जाती है। यह तर्क दिया गया कि बचाव पक्ष यह प्रदर्शित करने में सक्षम नहीं है कि पीडब्लू-5 और पीडब्लू-2 अभियुक्त के लिए शत्रुतापूर्ण थे। इसलिए उनके झूठ बोलने का कोई कारण नहीं है। इसके अलावा, बचाव पक्ष ने आरोपी और छोटू को पहचानने की पीडब्लू-2 या पीडब्लू-5 की क्षमता पर सवाल नहीं उठाया है। चांदनी की उपस्थिति पर संदेह करने के लिए पीडब्लू-5 पर भी कोई सवाल नहीं उठाया गया है। सभी गवाहों ने कहा है कि यह एक पूर्णिमा थी और इस बयान को कोई चुनौती नहीं है। ऐसी परिस्थितियों में, पीडब्लू-5 की गवाही विश्वसनीय है। नतीजतन, विचारण न्यायालय और उच्च न्यायालय को उसी पर भरोसा रखने में उचित ठहराया गया।

बी.

सी.

16. पीडब्लू-2 की गवाही के संबंध में, राज्य के विद्वान अधिवक्ता ने प्रस्तुत किया कि पीडब्लू-2 ने घटना के बारे में पुलिस को खुलासा करने में जल्दबाजी नहीं की होगी, लेकिन उसकी गवाही को

केवल उस आधार पर खारिज नहीं किया जा सकता है क्योंकि, यहाँ एक ऐसा मामला है जहाँ आरोपी अपराधी थे, गवाहों के मन में आशंका से इनकार नहीं किया जा सकता है।

डी.

17. पीडब्लू-6 की गवाही के संबंध में, यह तर्क दिया गया कि उन्होंने भी उस दुर्भाग्यपूर्ण शाम को मृतक के आरोपी के साथ होने के संबंध में अभियोजन पक्ष के मामले का समर्थन किया; इसलिए, उनकी गवाही का उपयोग अन्य गवाहों की गवाही की पुष्टि करने के लिए किया जा सकता है।

ई.

18. राज्य के विद्वान अधिवक्ता ने अपनी दलीलों का सारांश यह कहते हुए प्रस्तुत किया कि आखिरी बार देखी गई परिस्थिति पूरी तरह से साबित हो गई है; देशी पिस्तौल की बरामदगी भी साबित हो गई है जो फोरेंसिक रिपोर्ट के साथ बरामद हथियार को मौके पर पाए गए खाली कार्ट्रिज से जोड़ती है; शव परीक्षण रिपोर्ट/चिकित्सा साक्ष्य साबित करता है कि मृत्यु बंदूक की गोली का परिणाम थी और मृत्यु की संभावना को भी स्वीकार करता है जब मृतक को आखिरी बार आरोपी के साथ जीवित देखा गया था, इसलिए परिस्थितियों की श्रृंखला पूरी हो गई है, जिससे आरोपी के अपराध के संबंध में संदेह की कोई गुंजाइश नहीं बची है। इसलिए, विचारण न्यायालय द्वारा दर्ज की गई दोषसिद्धि, जिसे अपीलीय न्यायालय द्वारा पुष्टि की गई है, किसी भी हस्तक्षेप की मांग नहीं करती है।

एफ.

जी.

चर्चा और विश्लेषण:-

19. हमने प्रतिद्वंद्वी प्रस्तुतियों पर विचार किया है और अभिलेखों का सावधानीपूर्वक अध्ययन किया है। मामले की उल्लेखनीय विशेषता यह है कि ए की एफ. आई. आर.

एच.

19

रावी मंडल बनाम उत्तरखंड राज्य [मनोज मिश्रा, जे.]

सूचना देने वाले के बेटे का शव जंगल में मिलने के बाद 0730 बजे 01.11.2001 पर मामला दर्ज किया गया था। पुलिस गवाहों की गवाही के अनुसार, यह मुखबिर ही था जिसने पुलिस को जंगल में अपने बेटे का शव मिलने की जानकारी दी और उसके बाद, प्राथमिकी के आधार पर, जांच शुरू की गई। जबकि, पीडब्लू-1 के अनुसार पुलिस ने उसे सूचित किया कि उसके बेटे का शव जंगल में मिला है और उसके बाद वह मौके पर गया, शव को पुलिस स्टेशन लाया और फिर रिपोर्ट दर्ज कराई। अभियोजन पक्ष के गवाहों की गवाही में यह दरार महत्वपूर्ण है क्योंकि यह एक सवाल खड़ा करेगा

कि क्या अभियोजन पक्ष का मामला सूचना देने वाले के अपने ज्ञान और जानकारी पर आधारित है या सुझावों/अनुमान के काम पर, पुलिस के कहने पर हो सकता है।

बी.

सी.

20. एफ. आई. आर. में इस बात का कोई खुलासा नहीं किया गया है कि उस जंगल में शव कैसे मिला। एफ. आई. आर. में एकमात्र खुलासा यह है कि लगभग 2100 बजे, सूचना देने वाले के बेटे को उसके दोस्तों गोविंद (गैर-आरोपी) और रवि बंगाली के साथ देखा गया था। एफ. आई. आर. में यह खुलासा नहीं किया गया है कि मृतक को उपरोक्त दो व्यक्तियों के साथ किसने देखा था। इसमें कोई संदेह नहीं है कि एक एफ. आई. आर. को विश्वकोश होने की आवश्यकता नहीं है और उन सभी गवाहों का नाम लेने की आवश्यकता नहीं है जिनसे जानकारी ली जाती है, लेकिन महत्वपूर्ण बात यह है कि एफ. आई. आर. में रवि बंगाली के अलावा एक गोविंद के खिलाफ संदेह व्यक्त किया गया है, जिसे एक अपराधी बताया गया है और एक व्यक्ति जो सूचना देने वाले के बेटे को गलत रास्ता अपनाने के लिए प्रभावित कर रहा है, और शब्बीर यानी अपीलार्थियों में से एक के बारे में कोई खुलासा नहीं किया गया है। एफ. आई. आर. में यह भी आश्चर्यजनक रूप से अनुपस्थित है कि उस दुर्भाग्यपूर्ण शाम को छोटू (मृतक) और उसके दोस्तों को एक फिल्म का नाइट शो देखना था और इसलिए छोटू ने पी. डब्ल्यू.-7 को अपने माता-पिता (यानी पी. डब्ल्यू.-1 और पी. डब्ल्यू.-3) से भोजन लेने के लिए भेजा था।

डी.

ई.

एफ.

21. अभियोजन पक्ष की कहानी जो बाद में विकसित होती है, वह यह है कि पी. डब्ल्यू.-7 (बबलू) को छोटू द्वारा उसके और उसके दोस्तों के लिए उसके घर से भोजन लाने के लिए भेजा गया था और छोटू की माँ (पी. डब्ल्यू.-3) ने टिफिन बॉक्स में भोजन भेजा था। कहानी का यह हिस्सा प्राथमिकी में पूरी तरह से अनुपस्थित है, भले ही यह मृतक के पिता द्वारा दर्ज किया गया था, जो अपने अभिसाक्ष्य के अनुसार, इसके बारे में जानकारी ले रहे थे। यह सब एक संदेह को जन्म देगा कि क्या कहानी में बाद के सुधार नए पेश किए गए गवाहों की मदद से लिंक साक्ष्य बनाने के लिए थे। यह संदेह पीडब्लू-10 के अभिसाक्ष्य से मजबूत होता है कि जांच के दौरान पीडब्लू-1 ने खुलासा किया था कि मृतक घर नहीं आ रहा था और इसलिए, यह जांचने के लिए कि क्या पीडब्लू-7 का मृतक के लिए भोजन पैक करने का अनुरोध था

जी.

एच.

असली हो या न हो, पीडब्लू-1 ने पीडब्लू-7 का पीछा किया था और फिर उसने छोटू, रवि बंगाली को एक साथ देखा और कुछ दूरी पर शब्बीर भी वहाँ था। विशेष रूप से, पीडब्लू-1 ने न्यायालय में अपने अभिसाक्ष्य के दौरान ऐसा कोई खुलासा नहीं किया। इसलिए यह स्पष्ट है कि गवाहों की संख्या बढ़ाने का जानबूझकर प्रयास किया गया था। अभियोजन पक्ष के मामले में एक और महत्वपूर्ण सुधार इसकी इमारत यानी उद्देश्य के संबंध में है। शुरु में, अपराध का मकसद गोविंद के साथ दुश्मनी था। लेकिन, बाद में, जब गोविंद जीवित नहीं पाए गए, तो उनकी जगह शब्बीर को आरोपी बनाया गया। ये सभी परिस्थितियाँ संचयी रूप से हमारे दिमाग में संदेह पैदा करती हैं कि क्या यह एक अंधी हत्या (यानी रात के अंधेरे में एक सुनसान जगह पर हो रही है जहाँ कोई भी अपराध नहीं देख सकता था) का एक सर्वोत्कृष्ट मामला है, इसलिए, मामले को हल करने के लिए, गवाहों को टटोलते हुए, अभियोजन पक्ष की कहानी विकसित होती रही, या तो समय-समय पर प्राप्त जानकारी के आधार पर, या मजबूत संदेह से उत्पन्न अनुमान कार्य पर, या पुलिस के सुझावों पर। उस पृष्ठभूमि में, हमारे विचार में, यह एक ऐसा मामला है जहाँ अभियोजन पक्ष के गवाहों की गवाही, भले ही उनके पास आरोपी के खिलाफ कोई सिद्ध द्वेष न हो, यह पता लगाने के लिए कि क्या यह विश्वसनीय, विश्वसनीय/भरोसेमंद है और सच है, इसकी सख्ती से जांच की जानी चाहिए।

बी.

सी.

डी.

22. उपरोक्त के आलोक में, जब हम अभियोजन पक्ष के साक्ष्य की जांच करते हैं, तो हम पाते हैं कि अभियोजन पक्ष का मामला मुख्य रूप से इस साक्ष्य पर आधारित है कि मृतक को अंतिम बार दो अभियुक्तों के साथ घटना स्थल के पास या घटना के संभावित समय के बारे में, यानी 31.10.2001 01.11.2001 की आधी रात के आसपास, जीवित देखा गया था। इस तरह के साक्ष्य दो गवाहों, पी. डब्ल्यू.-2 (चंदन सिंह) और पी. डब्ल्यू.-5 (महेंद्र खुराना) से सामने आते हैं। जहाँ तक पीडब्लू-6 का संबंध है, हम उसे विश्वसनीय नहीं मानते हैं, क्योंकि, सबसे पहले, उसे शब्बीर द्वारा मृतक पर बंदूक से गोली चलाने के चश्मदीद गवाह के रूप में स्थापित किया गया था, लेकिन उसने इस तरह की गोली देखने से इनकार किया और दूसरा, प्रतिपरीक्षा के दौरान, उसने कहा कि उसने घटना नहीं देखी थी।

ई.

एफ.

23. जहाँ तक पीडब्लू-2 का संबंध है, वह पुलिस रिपोर्ट/आरोप पत्र में गवाह के रूप में सूचीबद्ध नहीं है। उन्होंने पहली बार 18.02.2002 पर, यानी जिस तारीख को पुलिस रिपोर्ट तैयार की गई थी, एक

हलफनामे पर पुलिस को अपना बयान दिया। इसका तात्पर्य यह है कि वह साढ़े तीन महीने तक चुप रहे। काली राम बनाम हिमाचल प्रदेश राज्य 1 में, इस न्यायालय की तीन न्यायाधीशों की पीठ ने उन गवाहों में से एक की गवाही को खारिज करते हुए, जिसने देरी से खुलासा किया था।

जी.

1 (1973) 2 एससीसी 808 ए

एच.

21

रावी मंडल बनाम उत्तरखंड राज्य [मनोज मिश्रा, जे.]

जिन दोषपूर्ण परिस्थितियों के बारे में उन्हें बहुत पहले पता था, वे मानी गईं/देखी गईं:

“14. ... परमानंद के अभिसाक्ष्य के इस हिस्से को स्वीकार करना हमें मुश्किल लगता है। परम नंद स्वीकार करते हैं कि उन्हें ध्यानू और नंती की हत्या के बारे में उन लोगों की हत्या के लगभग चार दिन बाद पता चला था। इसलिए, यह होगा कि परम नंद को 4 अक्टूबर, 1968 को या उसके आसपास ध्यानू और नंती की हत्या के बारे में पता चला। यदि आरोपी 29 सितंबर की शाम को मृतक ध्यानू के घर के लिए निकल जाता और परम नंद अभि. साक्षी को पता चलता कि ध्यानू और नंती की उनके घर में हत्या कर दी गई थी, तो इस तथ्य ने आरोपी की मिलीभगत के बारे में परम नंद के संदेह को जन्म दिया होगा। हालाँकि, परम नंद इस मामले में चुप रहे और इस बारे में बात नहीं की। पुलिस ने दिसंबर में परम नंद का बयान दर्ज किया था

बी.

सी.

**11, 1968.** यदि कोई गवाह हत्या के अपराध के आरोपी व्यक्ति के खिलाफ गंभीर रूप से दोषपूर्ण परिस्थिति के बारे में जानने का दावा करता है और गवाह आरोपी के खिलाफ उक्त अपराधपूर्ण परिस्थिति के बारे में दो महीने से अधिक समय तक चुप रहता है, तो किसी भी ठोस कारण के अभाव में अपराधपूर्ण परिस्थिति से संबंधित उसका बयान, अपने अधिकांश मूल्य को खोने के लिए बाध्य है। कोई ठोस कारण नहीं

डी.

हमें दिखाया गया है कि क्यों परमानंद दो महीने से अधिक समय तक चुप रहे जब उन्हें ध्यानू और नंती की हत्या के बारे में पता चला कि आरोपी हत्या से कुछ समय पहले मृतक के घर चले गए थे। इसलिए हम परमानंद के अभिसाक्ष्य के दूसरे भाग पर कोई भरोसा करने के लिए तैयार नहीं हैं।”

ई.

(जोर दिया गया) 24।ऊपर निकाले गए कानूनी सिद्धांत को ध्यान में रखते हुए, हमें यह जांचना होगा कि क्या, प्रकटीकरण में देरी के लिए, पीडब्लू-2 द्वारा एक ठोस स्पष्टीकरण दिया गया था।तत्काल मामले में, पीडब्लू-2 द्वारा उनके साढ़े तीन महीने के मौन के लिए दिया गया एकमात्र स्पष्टीकरण यह है कि उन्हें खतरा महसूस हुआ।उसकी खतरे की धारणा के संबंध में, पीडब्लू-2 ने कहा कि घटना की रात जब उसने रवि बंगाली और शब्बीर अहमद को जंगल से बाहर निकलते देखा, तो घटना के तुरंत बाद, उसने देखा कि उनके हाथ और कपड़े खून से सने हुए थे।पीडब्लू-2 को देखने पर, उन दोनों अभियुक्तों ने उसे यह कहकर धमकी दी कि अगर उसने (पीडब्लू-2) जो देखा है उसके बारे में किसी को बताया तो उसका भी वही हाल होगा।पीडब्लू-2 ने कहा कि दोनों अभियुक्तों की गिरफ्तारी के साथ उनका डर दूर हो गया, इसलिए वे अब ए के रूप में सामने आ रहे हैं।

एफ.

जी.

एच.

22 सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट [2023] 7 एस. सी. आर.

एक गवाह।हमारे विचार में, यदि यह कारण था कि उसने पहले खुलासा नहीं किया था, तो आरोपी की गिरफ्तारी के बाद उसके द्वारा शीघ्र खुलासा किया जाना चाहिए था।विशेष रूप से, दोनों अभियुक्तों को 24.11.2001 पर गिरफ्तार किया गया था, फिर भी, 18.2.2002 तक उनके द्वारा कोई खुलासा नहीं किया गया था।इसलिए, हमारे सुविचारित विचार में, खुलासा करने में देरी के लिए उनके द्वारा दिया गया स्पष्टीकरण आत्मविश्वास बढ़ाने वाला नहीं है।

बी.

25. यह मानते हुए कि हम प्रकटीकरण करने में देरी के लिए स्पष्टीकरण को स्वीकार करते हैं, घटना के स्थान और समय को देखते हुए, मौके पर पीडब्लू-2 की उपस्थिति स्वाभाविक नहीं लगती है, विशेष रूप से, रात के उस विषम समय में।अपराध स्थल पर अपनी उपस्थिति के बारे में बताने के लिए, पीडब्लू-2 ने कहा कि उसके माता-पिता मोहल्ला खट्टा में एक अन्य स्थान पर रहते हैं और इसलिए, उनसे मिलने के लिए वह उस दुर्भाग्यपूर्ण रात उनसे मिलने गया और लौटते समय वह इस घटना को देख सकता था।जिरह के दौरान, पीडब्लू-2 ने कहा कि वह आमतौर पर अपने परिवार के साथ 2100 बजे रात का खाना खाता है और वह सप्ताह में कम से कम एक बार अपने माता-पिता से मिलने जाता था।पीडब्लू-2 के अनुसार, उस दुर्भाग्यपूर्ण रात वह अपने घर में खाना खाने के बाद अपने माता-पिता से मिलने के लिए अपने घर से निकला और लौटते समय, 0030 बजे उसने इस घटना को देखा।यह व्याख्या आत्मविश्वास बढ़ाने वाली नहीं है, विशेष रूप से, क्योंकि रात के उस विषम समय में पीडब्लू-2 की उनके घर की यात्रा की पुष्टि करने के लिए उनके माता-पिता से पूछताछ या जांच नहीं की गई है।हमारे विचार में, पीडब्लू-2 केवल एक संयोग गवाह है, जिसकी उस समय मौके पर उपस्थिति संतोषजनक रूप से समझाई नहीं गई है, इसलिए यह ध्यान में रखते हुए कि वह असामान्य रूप से लंबे समय तक यानी साढ़े तीन महीने से अधिक समय तक चुप रहा,

उसकी गवाही किसी भी श्रेय के योग्य नहीं है। हमारे विचार में, अगर न्यायालयों ने उनकी गवाही पर भरोसा करके गलती की।

सी.

डी.

ई.

26. जहाँ तक पीडब्लू-5 (महेंद्र खुराना) की गवाही का संबंध है, वह भी एक संयोग गवाह है। जब एक संयोग गवाह की गवाही पर भरोसा किया जा सकता है, तो कानून का निपटारा किया जाता है, जिसका अर्थ है कि एक संयोग गवाह के साक्ष्य के लिए बहुत सतर्क और करीबी जांच की आवश्यकता होती है और एक संयोग गवाह को घटना के स्थान पर अपनी उपस्थिति को पर्याप्त रूप से समझाना चाहिए। एक संयोग गवाह की गवाही जिसकी घटना स्थल पर उपस्थिति संदिग्ध बनी हुई है, को खारिज अभिसाक्ष्य दिया जाना चाहिए (देखें -राजेश यादव और एक अन्य

एफ.

उत्तर प्रदेश राज्य **2** और जरनैल सिंह और अन्य बनाम पंजाब राज्य **3**।

जी.

27. उस विषम समय पर मौके पर उनकी उपस्थिति के लिए पीडब्लू-5 द्वारा दिया गया स्पष्टीकरण गलत प्रतीत होता है। पीडब्लू-5 के अनुसार, उनके पास ए था।

2 (2022) 12 एससीसी 200 3 (2009) 9 एससीसी 719

एच.

23

रावी मंडल बनाम उत्तरखंड राज्य [मनोज मिश्रा, जे.]

इसलिए, एक फिल्म का नाइट शो देखते हुए, प्रकृति के आह्वान में भाग लेने के लिए, वह सिनेमा हॉल से बाहर आ गए और जब वे खुद को शांत कर रहे थे, तो उन्हें इस घटना को देखने का मौका मिला। यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि उस सिनेमा हॉल में एक ग्राम विक्रेता, जांच अधिकारी (पीडब्लू-10) और पीडब्लू-7 ने बयान दिया है कि सिनेमा हॉल में शौचालय हैं जहां उनके उपयोग के लिए कोई पैसा नहीं लिया जाता है। यह पीडब्लू-5 के इस स्पष्टीकरण को गलत साबित करता है कि वह खुद को शांत करने के लिए सिनेमा हॉल से बाहर गए थे क्योंकि सिनेमा हॉल शौचालय के उपयोग के लिए पैसे लेता था। अन्यथा भी, पीडब्लू-10 (जांच अधिकारी) ने अपने अभिसाक्ष्य में कहा था कि उन्हें वह जगह नहीं दिखाई गई थी जहां पीडब्लू-5 खुद को शांत करने के लिए बैठा था।

बी.

28. इसके अलावा, पीडब्लू-5 सुसंगत नहीं है क्योंकि, धारा 161 Cr.P.C के तहत अपने अभिसाक्ष्य में, जिसके साथ उनका अभिसाक्ष्य के दौरान सामना किया गया था, उन्होंने गोविंद, रवि बंगाली और शब्बीर को यह कहते हुए दोषी ठहराया था कि तीनों मृतक के साथ मौजूद थे, लेकिन न्यायालय में अपने अभिसाक्ष्य के दौरान उन्होंने कहा कि गोविंद मौजूद नहीं थे। वह उस स्थान के संबंध में भी सुसंगत नहीं है जहाँ उनका बयान दर्ज किया गया था। एक जगह वह कहता है कि यह पुलिस स्टेशन में दर्ज किया गया था और दूसरी जगह वह कहता है कि यह उसकी दुकान पर दर्ज किया गया था।

सी.

डी.

29. मामले की एक अन्य महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि पीडब्लू-10 (जांच अधिकारी) के अनुसार, पीडब्लू-5 का बयान उसके द्वारा पीडब्लू-5 के घर पर 01.11.2001 पर दर्ज किया गया था। पुलिस द्वारा पीडब्लू-5 के आवास पर उसका बयान दर्ज करने के लिए जाने का क्या कारण था, अभियोजन पक्ष द्वारा इसका खुलासा नहीं किया गया है। हमें यह समझ में नहीं आता कि पुलिस पीडब्लू-5 के आवास पर उसका बयान दर्ज करने के लिए क्यों जाएगी, जबकि प्राथमिकी में अपराध स्थल पर पीडब्लू-5 की उपस्थिति या घटना के बारे में उसकी जानकारी के बारे में कोई खुलासा नहीं किया गया है। ये सभी परिस्थितियाँ हमारे मन में एक संदेह पैदा करती हैं कि क्या जंगल में शव मिलने पर, अभियुक्तों को तथ्यों से परिचित व्यक्तियों से प्राप्त जानकारी के बजाय संदेह के आधार पर पुलिस के कहने पर फंसाया गया था।

ई.

एफ.

30. उपरोक्त सभी कारणों से, जब हम पीडब्लू-2 और पीडब्लू-5 की गवाही का सावधानीपूर्वक और उचित सावधानी के साथ मूल्यांकन करते हैं, जैसा कि मामले के तथ्यों में आवश्यक है, तो हम पाते हैं कि उनकी गवाही दोषसिद्धि को बनाए रखने के लिए हमारे विश्वास को प्रेरित नहीं करती है। दुर्भाग्य से, अवर न्यायालयों ने इसे स्थापित कानूनी सिद्धांतों के आधार पर परीक्षण किए बिना, इसे सुसमाचार सत्य के रूप में स्वीकार कर लिया, जिसके परिणामस्वरूप न्याय की गंभीर विफलता हुई। इसलिए हम यह निष्कर्ष निकालते हैं कि अभियोजन पक्ष ए से परे साबित करने में विफल रहा है।

जी.

एच.

उचित संदेह है कि मृतक को आखिरी बार घटनास्थल के पास आरोपी के साथ जीवित देखा गया था।

31. जहाँ तक अभियुक्त की गिरफ्तारी के समय उसके व्यक्ति से देसी पिस्तौल और चाकू की बरामदगी का संबंध है, वही निम्नलिखित कारणों से हमारे विश्वास को प्रेरित नहीं करता है-पीडब्लू-10 के अनुसार, जाँच अधिकारी को, जब वह संदिग्धों/अभियुक्तों की तलाश कर रहा था, एक मुखबिर से जानकारी मिली कि अभियुक्तों को 1600 बजे एक निर्दिष्ट स्थान पर आना था।लेकिन, उक्त जानकारी की प्राप्ति का कोई रिकॉर्ड नहीं है, भले ही कहा जाता है कि यह कार्रवाई से कुछ घंटे पहले प्राप्त हुई थी।यह मानते हुए कि ऐसी जानकारी प्राप्त हुई थी, एक सार्वजनिक गवाह को शामिल करने का कोई प्रयास नहीं प्रतीत होता है, भले ही पीडब्लू-10 के बयान के अनुसार एक इलाका उस स्थान से सिर्फ 200 मीटर की दूरी पर था।अंत में, सबसे दिलचस्प बात यह है कि शस्त्र अधिनियम के तहत दंडनीय अपराध से संबंधित मामले की जांच करने वाले जांच अधिकारी ने 06.12.2001 पर गिरफ्तारी/बरामदगी के स्थान की योजना तैयार की, भले ही गिरफ्तारी कथित रूप से 24.11.2001 पर की गई थी, जो मामले के तथ्यों से पता चलता है कि यह औपचारिकता को पूरा करने की कवायद थी।इसके अलावा, स्थल योजना उस स्थान का खुलासा नहीं करती है जहां जीप को आरोपी पर घात लगाने के लिए जंगल में छिपाया गया था।ऊपर उल्लिखित परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए, इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि शब्बीर को प्राथमिकी में संदिग्ध के रूप में नामित नहीं किया गया था और उसका नाम बाद में पीडब्लू-5 के बयान में सामने आया, जिसका बयान उसी दिन उसके आवास पर दर्ज किया गया था, भले ही, उसे प्राथमिकी में गवाह के रूप में उद्धृत नहीं किया गया था, पीडब्लू-1 के बयान को ध्यान में रखते हुए कि पुलिस ने उसे शब्बीर पर आरोप लगाने वाली दूसरी रिपोर्ट प्रस्तुत करने के लिए कहा था, हमारा विचार है कि पुलिस ने शब्बीर को फंसाने में असाधारण रुचि दिखाई थी और इसलिए, उपरोक्त सभी कारणों से, अपीलार्थियों से दिखाई गई बंदूक और चाकू की कथित बरामदगी हमारे विश्वास को प्रेरित नहीं करती है।हमारे सुविचारित दृष्टिकोण में, दोषसिद्धि को बनाए रखने के लिए इस तरह की वसूली पर भरोसा करना असुरक्षित होगा।

बी.

सी.

डी.

ई.

एफ.

32. जहां तक फोरेंसिक रिपोर्ट/बैलिस्टिक रिपोर्ट का संबंध है, उसे शब्बीर के सामने भी नहीं रखा गया है, जिससे देश में बनी पिस्तौल जब्त की गई थी, इसलिए उसका बयान Cr.P.C की धारा 313 के तहत दर्ज करते समय, किसी भी स्थिति में, इसे विचार से बचना होगा।

जी.

निष्कर्ष:-

33. उपरोक्त चर्चा के आलोक में, हमारा विचार है कि हाथ में मामला एक सर्वोत्कृष्ट मामला है जहां ए को हल किया जाए।

एच.

25

रावी मंडल बनाम उत्तरखंड राज्य [मनोज मिश्रा, जे.]

अंधी हत्या, रात के अंधेरे में एक जंगल में होने वाली, टुकड़ों और सबूतों के टुकड़े एकत्र किए गए थे जो उस पर दोषसिद्धि के आधार पर एक सख्त जांच की आवश्यकता थी। अभियोजन पक्ष के साक्ष्य की कड़ी जांच करने और ऊपर चर्चा किए गए तथ्य किए गए कानूनी सिद्धांतों के आधार पर उनका परीक्षण करने पर, हम साक्ष्य को अभियुक्त अपीलार्थियों की दोषसिद्धि को बनाए रखने के लिए विश्वास प्रेरक नहीं पाते हैं। हमारे विचार में, नीचे दी अवर न्यायालयों सही कानूनी सिद्धांतों को लागू करके साक्ष्य का उचित मूल्यांकन और परीक्षण करने में विफल रही हैं। ऐसी परिस्थितियों में, नीचे दिए अवर न्यायालयों के निर्णयों को अपास्त करना जा सकता है। नतीजतन, अपीलार्थियों की अनुमति दी जाती है। उच्च न्यायालय और विचारण न्यायालय के विवादित निर्णय और आदेशों को अपास्त करना दिया जाता है। अपीलार्थियों उन सभी आरोपों से बरी हो जाते हैं जिनके लिए उन पर मुकदमा चलाया गया है और उन्हें दोषी ठहराया गया है।

बी.

सी.

34. अपीलार्थियों कथित तौर पर जमानत पर हैं, उन्हें आत्मसमर्पण करने की आवश्यकता नहीं है। उनके जमानत-बांड, यदि कोई हों, तो उन्हें रिहा कर दिया जाता है। यदि वे जमानत पर नहीं हैं, तो उन्हें तुरंत रिहा कर दिया जाएगा जब तक कि वे किसी अन्य मामले में वांछित न हों।

डी.

अंकित ज्ञान

अपीलों की अनुमति दी गई।

(सहायक: मनीष तोमर और आर्श चौधरी, एलसीआरए)

ई.

एफ.

जी.

एच.